International Journal of Advance Interdisciplinary Research
Vol. 2, Issue 2, Part A, April-June) 2026, pp. 165-172, e-ISSN: 3107-913X
DOI: https://doi.org/10.66095/ijair.2026.v2.i2.a.11

स्वदेशी पद्धतियों के माध्यम से दिव्यांग और गैर-दिव्यांग बच्चों का समग्र विकास

डॉ. सीता राम पाल[1], दानवीर गौतम[2]
[1]सहायक प्रोफ़ेसर, श्रवण बाधित विभाग, विशेष शिक्षा संकाय, डीएसएमएनआर विश्वविद्यालय, लखनऊ
[2]सहायक प्रोफ़ेसर (अतिथि व्याख्याता), विशेष शिक्षा संकाय, डीएसएमएनआर विश्वविद्यालय, लखनऊ
E-mail id: srpal74@gmail.com, dvghind@gmail.com

सार :

समग्र विकास के लिए संज्ञानात्मक, शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों में बच्चे के विकास को सहयोग देने हेतु एक संपूर्ण दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। समावेशी शिक्षा सभी बच्चों, जिनमें दिव्यांग बच्चे भी शामिल हैं, के लिए समान शिक्षण अनुभव सुनिश्चित करने की कुंजी है। सामुदायिक ज्ञान, स्थानीय रीति-रिवाजों, मौखिक परंपराओं, व्यावहारिक शिक्षा और टीम वर्क पर आधारित स्वदेशी पद्धतियाँ सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त और समावेशी शिक्षण रणनीतियों को प्रोत्साहित करती हैं। ये पद्धतियाँ संबंध निर्माण, विविधता का सम्मान, सहयोग को बढ़ावा देने और वास्तविक जीवन के अनुभवों के माध्यम से सीखने पर केंद्रित हैं। इससे ऐसे शैक्षिक वातावरण का निर्माण होता है जो प्रत्येक शिक्षार्थी का बराबर सम्मान करता है। यह शोध इस बात का अध्ययन करता है कि समावेशी शैक्षिक वातावरण में दिव्यांग और गैर-दिव्यांग बच्चों सहित, स्वदेशी पद्धतियाँ बच्चों के समग्र विकास में किस प्रकार सहायक होती हैं। यह पद्धतियाँ कहानी सुनाना, लोक कलाएँ, पारंपरिक खेल, प्रकृति-आधारित शिक्षा, सामुदायिक भागीदारी और पीढ़ियों के बीच ज्ञान साझा करने जैसी पद्धतियों का अन्वेषण करता है। ये पद्धतियाँ संज्ञानात्मक कौशल, भाषा विकास, सामाजिक समावेशन, भावनात्मक स्वास्थ्य, सांस्कृतिक पहचान और जीवन कौशल को बढ़ावा देती हैं। यह अध्ययन इस बात का भी आकलन करता है कि आधुनिक समावेशी शिक्षा को सहयोग देते हुए ये पद्धतियाँ विविध शिक्षार्थियों के बीच सहभागिता, अपनेपन की भावना, आत्मसम्मान और प्रशंसा को कैसे बढ़ावा देती हैं। यह शोध समावेशी शिक्षा, दिव्यांगता अध्ययन, स्वदेशी ज्ञान और बाल विकास के विचारों को मिलाकर एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाता है। इसका उद्देश्य समावेशी कक्षाओं को बेहतर बनाने और सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक शैक्षिक नीतियों और शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को आकार देने वाली प्रभावी स्वदेशी शिक्षण विधियों की खोज करना है। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों का लक्ष्य शिक्षकों, पाठ्यक्रम विकासकर्ताओं, नीति निर्माताओं और समुदाय के सदस्यों को स्वदेशी विधियों को मानक शिक्षा पद्धतियों में एकीकृत करने के लिए व्यावहारिक सलाह प्रदान करना है। अंततः, यह अध्ययन एक समावेशी, सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक और टिकाऊ शैक्षिक ढांचे को प्रोत्साहित करता है जो स्वदेशी ज्ञान को प्रत्येक बच्चे के समग्र विकास, उसकी प्रतिष्ठा, भागीदारी और जीवन के कल्याण के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन के रूप में मार्ग प्रशस्त्र करता है भले ही बच्चे के दिव्यांगता की प्रकृति कितनी भी विषम हो।

प्रमुख शब्दः समग्र विकास, स्वदेशी पद्धतियाँ, समावेशी शिक्षा, दिव्यांग बच्चे, गैर-दिव्यांग बच्चे, स्वदेशी पद्धतियाँ।

International Journal of Advance Interdisciplinary Research
Vol. 2, Issue 2, Part A, April-June) 2026, pp. 165-172, e-ISSN: 3107-913X
DOI: https://doi.org/10.66095/ijair.2026.v2.i2.a.11

परिचय:

शिक्षा को अब अकादमिक सफलता से परे एक संपूर्ण प्रक्रिया के रूप में देखा जा रहा है। इसमें प्रत्येक बच्चे का शारीरिक, संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास शामिल है। समावेशी शिक्षा में, विविधता का सम्मान करने और निष्पक्षता को बढ़ावा देने वाले शिक्षण दृष्टिकोण, दिव्यांग और गैर-दिव्यांग दोनों प्रकार के बच्चों के समग्र विकास के लिए आवश्यक हैं। एक प्रभावी दृष्टिकोण स्वदेशी पद्धतियों के माध्यम से है, जो स्वदेशी ज्ञान, सांस्कृतिक प्रथाओं और सामुदायिक भागीदारी पर आधारित हैं। ये पद्धतियाँ व्यक्तियों, समुदायों, प्रकृति और आध्यात्मिकता के बीच संबंधों को पहचानते हुए, शिक्षण और अधिगम के लिए सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक और आकर्षक तरीके प्रदान करती हैं। ये सभी बच्चों के लिए समावेशी शिक्षण में स्थान बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका इस स्तर पर निभाती हैं कि वे अपनी सांस्कृतिक पहचान बनाए रखते हुए और आपसी भाई-चारे को बढ़ावा देते हुए फल-फूल सकें। स्वदेशी शब्द किसी क्षेत्र के उन मूल निवासियों को संदर्भित करता है जिनकी अपनी अनूठी भाषाएँ, सांस्कृतिक प्रथाएँ, सामाजिक व्यवस्थाएँ, मान्यताएँ और पीढ़ियों से चली आ रही ज्ञान परंपराओं से है।

स्वदेशी ज्ञान पर्यावरण और सामुदायिक जीवन के साथ गहरे जुड़ाव से समय के साथ विकसित होता है। यह मौखिक परंपराओं, अनुष्ठानों, कहानी सुनाने, कला, संगीत, शिल्प, कृषि, चिकित्सा पद्धतियों और पारिस्थितिक समझ के माध्यम से साझा किया जाता है। पारंपरिक पश्चिमी दृष्टिकोणों के विपरीत, जो अक्सर ज्ञान को अलग-अलग क्षेत्रों में विभाजित करते हैं, स्वदेशी ज्ञान सीखने को एक समग्र यात्रा के रूप में देखता है जिसमें बौद्धिक, भावनात्मक, शारीरिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पहलू शामिल होते हैं। स्वदेशी पद्धतियाँ स्वदेशी दृष्टिकोणों और दर्शनों से व्युत्पन्न अनुसंधान और शैक्षिक विधियाँ हैं। ये मानती हैं कि ज्ञान संबंधपरक है, समुदाय द्वारा साझा किया जाता है, और केवल वस्तुनिष्ठ अवलोकन के बजाय सामूहिक अनुभवों के माध्यम से विकसित होता है। ये पद्धतियाँ औपनिवेशिक और यूरोकेंद्रित शैक्षिक मॉडलों को चुनौती देती हैं जिन्होंने ऐतिहासिक रूप से स्वदेशी आवाजों और ज्ञान प्रणालियों को हाशिए पर रखा है। इसके बजाय, वे सांस्कृतिक विविधता, पारस्परिकता, सहयोग, नैतिक संबंधों और सीखने और अनुसंधान में सामुदायिक भागीदारी को प्राथमिकता देते हैं। इस प्रकार, स्वदेशी पद्धतियाँ केवल तकनीकें नहीं हैं; वे एक दार्शनिक दृष्टिकोण को समाहित करती हैं जो स्वदेशी ज्ञान, जीवन और कार्य करने के तरीकों को महत्व देता है। लिंडा तुहिवाई स्मिथ (2021) के अनुसार, स्वदेशी पद्धतियों का उद्देश्य स्वदेशी दृष्टिकोणों को उजागर करके, समुदायों को सशक्त बनाकर और आत्मनिर्णय को प्रोत्साहित करके अनुसंधान और शिक्षा को पुनः प्राप्त करना है। इसी प्रकार, शॉन विल्सन (2008) का सुझाव है कि स्वदेशी अनुसंधान एक अनुष्ठान के समान है, जो इस बात पर बल देता है कि ज्ञान व्यक्तियों, समुदायों, पूर्वजों और प्राकृतिक जगत के साथ साझा संबंधों और जिम्मेदारियों से उत्पन्न होता है। मार्गरेट कोवाच (2021) आगे कहती हैं कि स्वदेशी पद्धतियाँ स्वदेशी सत्ता मीमांसा, ज्ञान मीमांसा, मूल्य मीमांसा और कार्यप्रणाली को एक सुसंगत अनुसंधान ढाँचे में एकीकृत करती हैं। परिणामस्वरूप, स्वदेशी पद्धतियाँ एक वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रदान करती हैं जो वास्तविक जीवन के अनुभवों, सामूहिक ज्ञान और सांस्कृतिक निरंतरता का सम्मान करती हैं।शैक्षिक संदर्भों में, ये पद्धतियाँ सामुदायिक भागीदारी, व्यावहारिक गतिविधियों, अवलोकन, कहानी सुनाने, स्थानीय रीति-रिवाजों और पर्यावरण से जुड़ाव के माध्यम से सीखने को बढ़ावा देती हैं। केवल पाठ्यपुस्तकों और मानकीकृत

International Journal of Advance Interdisciplinary Research
Vol. 2, Issue 2, Part A, April-June) 2026, pp. 165-172, e-ISSN: 3107-913X
DOI: https://doi.org/10.66095/ijair.2026.v2.i2.a.11

शिक्षण पर निर्भर रहने के बजाय, ये सक्रिय भागीदारी, संवाद, सहयोग, रचनात्मकता और वास्तविक जीवन के अनुभवों को प्रोत्साहित करती हैं। ये विधियाँ विशेष रूप से दिव्यांग बच्चों को विभिन्न शिक्षण शैलियों और क्षमताओं के अनुरूप लचीले, सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक और शिक्षार्थी-केंद्रित अवसर प्रदान करके लाभान्वित करती हैं। वहीं, दिव्यांगता रहित बच्चे साझा शिक्षण अनुभवों के माध्यम से सहानुभूति, सहयोग, सांस्कृतिक जागरूकता और समावेशी दृष्टिकोण विकसित करते हैं।

स्वदेशी पद्धतियों की प्रकृति:

स्वदेशी पद्धतियों में कई अनूठी विशेषताएं हैं जो उन्हें पारंपरिक शैक्षिक और अनुसंधान के दृष्टिकोणों से अलग करती हैं। समग्रता एक ऐसा पहलू है जो मानव विकास को शारीरिक, बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास के मिश्रण के रूप में देखता है। सीखने को परिवार, समुदाय, पर्यावरण और संस्कृति से जुड़ी एक आजीवन यात्रा माना जाता है। संबंधपरक दृष्टिकोण इस बात पर जोर देता है कि ज्ञान व्यक्तियों, परिवारों, समुदायों, पूर्वजों और प्रकृति के बीच संबंधों के माध्यम से बनता और साझा किया जाता है, जिसमें सम्मानजनक संबंध शिक्षण, अधिगम और अनुसंधान के केंद्र में होते हैं। समुदाय-केंद्रित दृष्टिकोण में समुदाय के सदस्य शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान करने, अधिगम अनुभव बनाने, कार्यक्रमों को लागू करने और परिणामों का मूल्यांकन करने में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। सामुदायिक ज्ञान को अकादमिक ज्ञान के समान महत्व दिया जाता है। सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील पद्धतियां शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, भाषाओं, परंपराओं, रीति-रिवाजों और स्थानीय संदर्भों को पहचानती हैं। शिक्षा तब महत्वपूर्ण मानी जाती है जब वह बच्चों के वास्तविक जीवन के अनुभवों और सांस्कृतिक विरासत को प्रतिबिंबित करती है। सहभागी और सहयोगात्मक अधिगम केवल एकतरफा सूचना देने के बजाय सामूहिक भागीदारी, वार्तालाप, सहयोग और साझा जिम्मेदारी के माध्यम से होता है। अनुभवात्मक शिक्षा प्रत्यक्ष अनुभवों, अवलोकन, अभ्यास, कहानी सुनाने, प्रकृति से संबंधित गतिविधियों, पारंपरिक शिल्पकला और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करने पर जोर देती है। स्वदेशी पद्धतियाँ प्रतिभागियों, समुदायों और पर्यावरण के प्रति सम्मान, पारस्परिकता, जिम्मेदारी, विश्वास, विनम्रता और जवाबदेही को रेखांकित करती हैं। यह स्वदेशी पद्धतियां वास्तव में भारतीय संस्कृति की मूल **'महा उपनिषद' (अध्याय-4, श्लोक-71) "अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्। उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥** " को परिलक्षित करती हैं I

स्वदेशी पद्धतियों के प्रकार:

हालांकि स्वदेशी पद्धतियाँ संस्कृति और स्थान के अनुसार भिन्न होती हैं इसके बावजूद भी शिक्षा और अनुसंधान में व्यापक रूप से सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ मौजूद हैं। कहानी सुनाने की पद्धति ज्ञान, मूल्यों, इतिहास और जीवन कौशल को साझा करने के सबसे पुराने स्वदेशी तरीकों में से एक है। कहानियों के माध्यम से बच्चे नैतिक मूल्य, सांस्कृतिक परंपराएँ, भाषा, समस्या-समाधान कौशल और सामाजिक व्यवहार सीखते हैं। यह विधि विशेष रूप से दिव्यांग बच्चों के लिए सहायक है क्योंकि यह भाषा विकास, कल्पनाशीलता, संचार और भावनात्मक समझ को बढ़ावा देती है। मौखिक पद्धति बुजुर्गों और समुदाय के सदस्यों के अनुभवों, स्मृतियों और ज्ञान को संजोती है और सामाजिक कौशल के विकास एवं उन्हें बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं । ये कहानियाँ सांस्कृतिक विरासत को

संरक्षित करने में मदद करती हैं और बच्चों को अपनी पहचान, इतिहास और परंपराओं से जुड़ने का अवसर प्रदान करती हैं। वार्ता मंडल और साझाकरण मंडल सभी को अपने विचारों, अनुभवों और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए एक सम्मानजनक स्थान प्रदान करते हैं। ये मंडल दिव्यांग और गैर-दिव्यांग बच्चों के बीच समावेशन, सुनने के कौशल, भावनात्मक अभिव्यक्ति और समस्या-समाधान एवं समूह कार्य में प्रोत्साहित करते हैं। समुदाय-आधारित शिक्षा वास्तविक जीवन के सामुदायिक परिवेश में होती है जहाँ बच्चे स्थानीय नौकरियों, त्योहारों, पर्यावरण संरक्षण, पारंपरिक शिल्प, खेती और सामाजिक सेवा गतिविधियों में शामिल होते हैं। यह विधि व्यावहारिक कौशल, सामाजिक जिम्मेदारी और सामुदायिक भावना का निर्माण करती है। भूमि और प्रकृति आधारित शिक्षा स्वदेशी शिक्षा में एक महत्वपूर्ण कक्षा का काम करती है। बच्चे जंगलों, नदियों, खेतों, वन्यजीवों और प्राकृतिक संसाधनों के साथ सीधे संपर्क करके सीखते हैं। ये अनुभव पर्यावरण जागरूकता, अवलोकन कौशल, वैज्ञानिक ज्ञान और भावनात्मक स्वास्थ्य को बढ़ाते हैं। अंतरपीढ़ीगत शिक्षा में ज्ञान का हस्तांतरण बुजुर्गों से युवा पीढ़ियों तक अवलोकन, प्रदर्शन, मार्गदर्शन और साझा अनुभवों के माध्यम से होता है। बुजुर्ग सांस्कृतिक परंपराओं को संरक्षित करने और नैतिक मार्गदर्शन प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सहभागी कार्य पद्धति में समुदाय के सदस्य, शिक्षक, माता-पिता और शिक्षार्थी मिलकर समस्याओं की पहचान करने, समाधान खोजने, कार्रवाई करने और परिणामों का मूल्यांकन के लिए काम करते हैं। यह सहयोगात्मक दृष्टिकोण सशक्तिकरण, स्वामित्व और सतत शैक्षिक विकास को बढ़ावा देता है।

संबंधित साहित्य की समीक्षा:

हेयर **(2012)** ने कनाडा में युवा स्वदेशी बच्चों की साक्षरता शिक्षा में स्वदेशी ज्ञान के योगदान का अध्ययन किया। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि कहानी सुनाना, मौखिक परंपराएँ तथा प्रकृति एवं भूमि-आधारित अनुभव बच्चों के भाषा विकास, साक्षरता कौशल, सांस्कृतिक पहचान तथा सामुदायिक सहभागिता को सुदृढ़ बनाते हैं। शोधकर्ता ने सुझाव दिया कि प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में स्वदेशी शिक्षण विधियों को समाहित करने से बच्चों के समग्र विकास को प्रभावी रूप से प्रोत्साहित किया जा सकता है।

किटसन एवं बोवेस **(2010)** ने प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में स्वदेशी दृष्टिकोणों के समावेशन का अध्ययन किया। उनके निष्कर्षों से ज्ञात होता है कि सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील शिक्षण पद्धतियाँ तथा स्वदेशी शिक्षकों की सक्रिय भागीदारी प्री-स्कूल स्तर पर बच्चों की सीखने की उपलब्धियों, सहभागिता और अभिभावकों की भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि करती हैं।

काजेते **(2017)** ने स्वदेशी शिक्षा में कहानी सुनाने एवं मिथकों की भूमिका का विश्लेषण किया। अध्ययन के अनुसार कहानी सुनाना केवल ज्ञान हस्तांतरण का माध्यम नहीं है, बल्कि यह बच्चों में नैतिक मूल्यों, सांस्कृतिक पहचान, रचनात्मकता, भावनात्मक संतुलन तथा आध्यात्मिक विकास को भी सुदृढ़ करता है। इससे बच्चों के समग्र व्यक्तित्व विकास को प्रोत्साहन मिलता है।

एलेक एवं सहयोगियों **(2020)** ने स्वदेशी बच्चों के लिए संचालित प्रारंभिक बाल्यावस्था कार्यक्रमों की व्यवस्थित समीक्षा प्रस्तुत की। समीक्षा से यह निष्कर्ष निकलता है कि सांस्कृतिक रूप से अनुकूलित प्री-स्कूल कार्यक्रम बच्चों के संज्ञानात्मक विकास, विद्यालयीय तैयारी तथा समग्र विकास पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं। साथ ही उन्होंने ऐसे कार्यक्रमों के दीर्घकालिक मूल्यांकन की आवश्यकता पर भी बल दिया।

मैक्निवेन एवं सहयोगियों (2020) ने स्वदेशी बच्चों में विकासात्मक विलंब के लिए किए जाने वाले हस्तक्षेपों का अध्ययन किया। शोध के निष्कर्षों से पता चलता है कि कहानी सुनाना, परिवार की सक्रिय सहभागिता, सांस्कृतिक रूप से अनुकूलित शिक्षण रणनीतियाँ तथा पुरस्कार-आधारित शिक्षण बच्चों के संज्ञानात्मक, भावनात्मक एवं व्यवहारिक विकास में अत्यंत प्रभावी सिद्ध होते हैं।

रीगर एवं सहयोगियों (2023) ने स्वदेशी स्वास्थ्य अनुसंधान में कहानी सुनाने की पद्धतियों पर सहभागी विधि की समीक्षा की। अध्ययन में निष्कर्ष से पता चलता है कि कहानी सुनाना स्वदेशी समुदायों में विश्वास निर्माण, सांस्कृतिक सुरक्षा, सामुदायिक सहभागिता तथा समग्र विकास को बढ़ावा देने वाली एक प्रभावशाली अनुसंधान पद्धति है।

हाइबर्ट एवं यी (2023) ने पश्चिमी शिक्षण सिद्धांतों के साथ स्वदेशी कहानी सुनाने की एकीकरण पद्धति का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि इस प्रकार की शिक्षण प्रक्रिया समावेशी कक्षाओं के निर्माण में सहायक होती है तथा बच्चों में सहानुभूति, सांस्कृतिक जागरूकता, अपनेपन की भावना एवं सकारात्मक अधिगम अनुभवों का विकास करती है।

श्रोएडर, हंट एवं यंग (2022) ने स्वदेशी बच्चों के लिए संस्कृति-आधारित कहानी सुनाने के कार्यक्रम का मूल्यांकन किया। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि संरचित मौखिक कहानी सुनाने से बच्चों के भाषा कौशल, मौखिक क्षमता, आत्मविश्वास तथा सांस्कृतिक परंपराओं के प्रति सम्मान में वांछित वृद्धि देखने को मिलती है ।

हंट एवं यंग (2021) ने स्वदेशी बच्चों से संबंधित अनुसंधानों में साझाकरण मंडलियों (Sharing Circles) के उपयोग की समीक्षा की। उन्होंने पाया कि यह पद्धति प्रतिभागियों के बीच विश्वास, सम्मानजनक संवाद, सक्रिय सहभागिता तथा सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त डेटा संग्रह को प्रोत्साहित करती है।

सन (2022) ने स्वदेशी सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा (SEL) पर तीन वर्षीय समुदाय-आधारित अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि सांस्कृतिक रूप से आधारित SEL कार्यक्रम बच्चों में पहचान की भावना, भावनात्मक स्वास्थ्य, सामुदायिक जुड़ाव तथा जीवन-स्थितियों का सामना करने की क्षमता (Resilience) को विकसित करते हैं।

केर एवं फर्ग्यूसन (2021) ने स्वदेशी कहानी कार्य (Indigenous Story work) एवं नैतिक संबंधपरकता (Ethical Relationality) को शैक्षिक अनुसंधान की एक महत्वपूर्ण एवं प्रभावी पद्धति के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि स्वदेशी पद्धतियाँ शोधकर्ताओं, शिक्षकों एवं समुदायों के बीच सम्मान, सहयोग, उत्तरदायित्व तथा संस्कृति-संवेदनशील अनुसंधान को प्रोत्साहित करती हैं।

मेहता (2025) ने भारत की **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020)** के संदर्भ में स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों की भूमिका का विश्लेषण किया। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि स्वदेशी शिक्षण पद्धतियाँ समग्र, व्यावहारिक एवं समावेशी शिक्षा को सुदृढ़ बनाती हैं, किन्तु जनजातीय ज्ञान के व्यवस्थित दस्तावेजीकरण एवं पाठ्यक्रम में उसके प्रभावी समावेशन की प्रासंगिकता बनी हुई है।

सन एवं सहयोगियों (2022) ने समुदाय-केंद्रित स्वदेशी शिक्षा के प्रभावों का अध्ययन किया। शोध में पाया गया कि सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक शिक्षण एवं समुदाय के साथ साझेदारी बच्चों के सामाजिक-भावनात्मक कौशल, सांस्कृतिक पहचान तथा शिक्षा में सक्रिय सहभागिता को बढ़ाने में अत्यंत अत्यंत प्रभावशाली है।

International Journal of Advance Interdisciplinary Research
Vol. 2, Issue 2, Part A, April-June) 2026, pp. 165-172, e-ISSN: 3107-913X
DOI: https://doi.org/10.66095/ijair.2026.v2.i2.a.11

व्हाइट (2022) ने समग्र स्वदेशी शिक्षा (Holistic Indigenous Education) का अध्ययन करते हुए निष्कर्ष निकाला कि भाषा, संस्कृति, आध्यात्मिकता, पारिवारिक सहभागिता एवं व्यावहारिक अनुभवों का एकीकरण बच्चों के संतुलित विकास को बढ़ावा देता है तथा सभी विद्यार्थियों के लिए अधिक समावेशी शैक्षिक वातावरण का निर्माण करता है।

अनुसंधान अंतराल: वर्तमान साहित्य से पता चलता है कि सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील शिक्षा को बढ़ावा देने, स्वदेशी ज्ञान की रक्षा करने और शिक्षण एवं अधिगम में सामुदायिक भागीदारी बढ़ाने के लिए स्वदेशी पद्धतियाँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। शोधकर्ताओं ने कुछ विशेष क्षेत्रों जैसे साक्षरता, सांस्कृतिक पहचान, स्वास्थ्य और प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा पर कहानी सुनाना, मौखिक परंपराएँ, प्रकृति के माध्यम से सीखना, सामुदायिक भागीदारी और व्यावहारिक अनुभव जैसी स्वदेशी शिक्षण पद्धतियों का गहन अध्ययन किया है, । इसी प्रकार, समावेशी शिक्षा पर किए गए अध्ययनों ने स्थापित शिक्षण पद्धतियों के माध्यम से दिव्यांग बच्चों के लिए पहुँच, भागीदारी और शैक्षिक परिणामों में सुधार लाने का प्रयास किया है। हालाँकि, इन दोनों क्षेत्रों को एक सुसंगत ढाँचे में जोड़ने वाले शोध की व्यापक कमी है। समावेशी शैक्षिक परिवेश में दिव्यांग और गैर-दिव्यांग के बच्चों के समग्र विकास में स्वदेशी पद्धतियों पर सीमित अध्ययन मौजूद हैं । अधिकांश मौजूदा अध्ययन या तो स्वदेशी बच्चों पर या दिव्यांगता-समावेशी शिक्षा पर अलग-अलग ध्यान केंद्रित करते हैं, सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील वातावरण में विविध शिक्षार्थियों के साझा अधिगम अनुभवों की अनदेखी करते हैं। इसके अतिरिक्त, संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक, शारीरिक, नैतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विकास पर स्वदेशी पद्धतियों के समग्र प्रभावों का गहन अध्ययन न के बराबर है। भारत में, स्वदेशी शिक्षण विधियों पर शोध अभी प्रारंभिक अवस्था में है और मुख्य रूप से जनजातीय शिक्षा, पारंपरिक ज्ञान या नीतिगत चर्चाओं से संबंधित है। दिव्यांग बच्चों के लिए समावेशी कक्षाओं में स्वदेशी प्रथाओं के उपयोग पर बहुत कम अध्ययन हुए हैं। इसके अलावा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में वर्णित व्यवस्था में भी स्वदेशी ज्ञान को शिक्षक प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम निर्माण और समावेशी शिक्षा में शामिल करने के संबंध में साक्ष्यों का अभाव है। इसलिए, इस अध्ययन का उद्देश्य समावेशी शैक्षिक वातावरण में दिव्यांग और गैर-दिव्यांग दोनों बच्चों के समग्र विकास में स्वदेशी विधियों की भूमिका का पता लगाकर इन कमियों को दूर करना है। उम्मीद है कि इस अध्ययन के निष्कर्ष सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील, समावेशी और टिकाऊ शैक्षिक प्रथाओं को विकसित करने में सहायक होंगे, जो भारत में शैक्षिक नीति, पाठ्यक्रम विकास, शिक्षक प्रशिक्षण और सामुदायिक भागीदारी को सुनिश्चित करने के लिए ठोस साक्ष्य प्रदान करेंगे।

निष्कर्ष

सर्वांगीण विकास हर बच्चे को उनकी क्षमताओं के अनुसार एक समावेशी और निष्पक्ष शैक्षिक वातावरण में अपने लक्ष्य तक पहुँचने में मदद करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। स्वदेशी पद्धतियाँ सांस्कृतिक रूप से जागरूक और संतुलित दृष्टिकोण प्रदान करती हैं जो सीखने को सामुदायिक भागीदारी, व्यावहारिक अनुभवों, पारंपरिक ज्ञान और सम्मानजनक संबंधों पर आधारित आजीवन यात्रा के रूप में देखती हैं। कहानी सुनाना, मौखिक परंपराएं, प्रकृति-आधारित शिक्षा, पारंपरिक खेल, लोक कलाएं और पीढ़ियों के बीच ज्ञान साझा करने जैसी स्वदेशी शिक्षण पद्धतियों के क्रियान्वयन से बच्चे के बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक, शारीरिक, नैतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विकास के पहलुओं को पोषित किया जा सकता है। दिव्यांग एवं गैर – दिव्यांग बच्चे अधिकतर समय अपने परिवार एवं

International Journal of Advance Interdisciplinary Research
Vol. 2, Issue 2, Part A, April-June) 2026, pp. 165-172, e-ISSN: 3107-913X
DOI: https://doi.org/10.66095/ijair.2026.v2.i2.a.11

समुदाय में व्यतीत करते हैं और एक दूसरे से बिना किसी हिचकिचाहट के संवाद स्थापित कर लेते हैं इसलिए दिव्यांग बच्चों के लिए, स्वदेशी पद्धतियाँ लचीले और समावेशी शिक्षण अनुभव प्रदान करती हैं जो व्यक्तिगत क्षमताओं का सम्मान करते हैं, सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करते हैं और समुदाय में अपनेपन की भावना को बढ़ावा देते हैं। दिव्यांगता रहित बच्चों के लिए, ये पद्धतियाँ सहानुभूति, सामूहिक कार्य , सांस्कृतिक समझ, विविधता के प्रति सम्मान और सहयोगात्मक शिक्षा को बढ़ावा देती हैं। ये पद्धतियाँ न केवल शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार करती हैं बल्कि सभी छात्रों के लिए एकसमान सामाजिक सामंजस्य, सांस्कृतिक पहचान और भावनात्मक कल्याण को भी बढ़ाती हैं। साहित्य समीक्षा से पता चलता है कि यद्यपि स्वदेशी पद्धतियों को विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त है फिर भी दिव्यांग और गैर-दिव्यांग बच्चों के समग्र विकास पर उनके प्रभाव पर विशेष रूप से भारत में सीमित शोध हुए हैं । यह समावेशी शिक्षा में स्वदेशी ज्ञान को एकीकृत करने के लिए साक्ष्य-आधारित दृष्टिकोण विकसित करने हेतु अधिक शोध की आवश्यकता को उजागर करता है। यह रणनीति राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के उद्देश्यों का समर्थन करती है, जो व्यावहारिक शिक्षा, समावेशन, बहुभाषावाद और स्वदेशी ज्ञान के संरक्षण को बढ़ावा देती है। अंततः, स्वदेशी पद्धतियाँ सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक, आकर्षक और टिकाऊ शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देकर समावेशी शिक्षा में व्यापक सुधार ला सकती हैं, जो दिव्यं एवं गैर – दिव्यांग सभी बच्चों के समग्र विकास, गरिमा और मानव कल्याण का समर्थन करते हुए स्वदेशी विरासत का संरक्षण करती हैं और भावी पीढ़ियों के लिए समावेशी शिक्षा को प्रोत्साहित करती हैं।

संदर्भ:

1. काजेते, जी. (2017). स्वदेशी समुदाय: सातवीं अग्नि की शिक्षाओं को पुनर्जीवित करना। वर्ल्ड फ्यूचर्स, 73(4–5), 287–305. https://doi.org/10.1080/02604027.2017.1353391
2. हेयर, जे. (2012). वे एक कहानी सुनाते हैं और उस कहानी के पीछे अर्थ है: स्वदेशी ज्ञान और युवा स्वदेशी बच्चों का साक्षरता सीखना। जर्नल ऑफ अर्ली चाइल्डहुड लिटरेसी, 12(4), 412–434.https://doi.org/10.1177/1468798411417378
3. हीबर्ट, एडी, और यी, एन. (2023). फ़ज़ी फ़ीट और स्कंक: कहानी के माध्यम से विकास और अधिगम के पश्चिमी और स्वदेशी सिद्धांतों को जोड़ना। जर्नल ऑफ़ द कैनेडियन एसोसिएशन फ़ॉर करिकुलम स्टडीज़, 20(2). https://doi.org/10.25071/1916-4467.40795
4. हंट, एससी, और यंग, एनएल (2021)। स्वदेशी बच्चों के स्वास्थ्य के अध्ययन के लिए स्वदेशी शेयरिंग सर्कल और पश्चिमी फोकस समूह पद्धतियों का मिश्रण: एक व्यवस्थित समीक्षा। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्वालिटेटिव मेथड्स, 20।https://doi.org/10.1177/16094069211015112
5. केर, जे., और फर्ग्यूसन, जी. (2021). गुणात्मक जांच में स्वदेशी कहानी कार्य और नैतिक संबंध। गुणात्मक जांच, 27(3–4), 355–365.https://doi.org/10.1177/1077800420971864
6. कित्सन, आर., और बोवेस, जे. (2010). प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में स्वदेशी ज्ञान पद्धतियों को शामिल करना। ऑस्ट्रेलियन जर्नल ऑफ अर्ली चाइल्डहुड, 35(4), 81–89. https://doi.org/10.1177/183693911003500410
7. मैकनिवेन, आर., जेफ्रीज़, टी.एल., मेहरग, डी., एट अल. (2020). विश्व स्तर पर स्वदेशी बच्चों को प्रभावित करने वाली विकासात्मक देरी के लिए क्या समाधान मौजूद हैं? एक सह-डिज़ाइन की गई व्यवस्थित समीक्षा। चिल्ड्रन, 7(12), 285. https://doi.org/10.3390/children7120285

8. मेहता, पी. (2025). स्वदेशी ज्ञान प्रणालियाँ और भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. जर्नल ऑफ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन. https://doi.org/10.1177/0972558X251361776
9. रीगर, के.एल., हॉर्टन, एम., कोपेनेस, एस., एट अल. (2023). स्वदेशी स्वास्थ्य अनुसंधान में कहानी कहने की विधियों के उपयोग को बढ़ावा देना: एक महत्वपूर्ण सहभागी स्कोपिंग समीक्षा। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्वालिटेटिव मेथड्स, 22. https://doi.org/10.1177/16094069231174764
10. श्रोएडर, जे., एट अल. (2022). स्वदेशी बच्चों के भाषा विकास के लिए सांस्कृतिक रूप से संदर्भित कहानी सुनाना। द ऑस्ट्रेलियन जर्नल ऑफ इंडिजिनस एजुकेशन, 51(2). https://doi.org/10.55146/ajie.v51i2.50
11. सन, जे., एट अल. (2022). समुदाय-आधारित स्वदेशी सामाजिक और भावनात्मक शिक्षण हस्तक्षेप। बाल विकास, 93(5)।https://doi.org/10.1111/cdev.13786
12. व्हाइट, जी. (2022). समग्र स्वदेशी शिक्षा और बाल विकास। फ्रंटियर्स इन एजुकेशन, 7. https://doi.org/10.3389/feduc.2022.699627
13. स्मिथ, एल.टी. (2021). पद्धतियों का विऔपनिवेशीकरण: अनुसंधान और स्वदेशी लोग (तृतीय संस्करण)।
14. ज़ेड बुक्स। विल्सन, एस. (2008). अनुसंधान एक समारोह है: स्वदेशी अनुसंधान पद्धतियाँ। फर्नवुड पब्लिशिंग।